



सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India



NIS&PR
National Institute of Science Communication and Policy Research
सीएसआईआर-निसपर

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 7

www.csir.res.in

जुलाई 2024

यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी) के प्रतिनिधिमंडल की बैठक में सीएसआईआर की महानिदेशक ने प्रतिभागिता की।



यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी) के कार्यकारी उपाध्यक्ष एडवर्ड नाइट के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में नार्थ ब्लॉक में केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह से मुलाकात की और

विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की। इस बैठक में सीएसआईआर की ओर से डॉ. एन. कलैसल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने भाग लिया। यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी), अमेरिका और भारत में

काम करने वाली शीर्ष वैश्विक कंपनियों का प्रतिनिधित्व करती है, यह दोनों देशों में कारोबार जगत और सरकारों के बीच संपर्क स्थापित करती है। इसमें लगभग 200 कंपनियां सदस्य हैं जिनमें 70 प्रतिशत



अमेरिकी हैं तथा शेष 30 प्रतिशत भारत से हैं। यूएसआईबीसी के कार्यालय भारत में दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु में हैं। इसका मुख्यालय वाशिंगटन डी.सी. में है। यूएसआईबीसी यू.एस. चैंबर आफ कॉमर्स का भी हिस्सा है।

इस अवसर पर डॉ. जितेन्द्र सिंह, केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री ने कहा कि 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत और अमेरिका के बीच बढ़ते सहयोग के साथ क्वांटम प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, महत्वपूर्ण धातुओं और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अनुकूल परिवेश बना है। मंत्री महोदय ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री की हाल की अमेरिका यात्रा को याद करते हुए भारत में ग्रीनफील्ड नवीकरणीय ऊर्जा, बैटरी भंडारण और उभरती हरित प्रौद्योगिकी परियोजनाओं को लेकर जारी संयुक्त वक्तव्य का भी उल्लेख किया।

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में सरकार के दृष्टिकोण पर जोर दिया और इसके यूएसआईबीसी द्वारा विकसित एआई टास्क फोर्स के साथ एकीकरण को लेकर उम्मीद जताई। उन्होंने यह भी कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वृहद भाषा मॉडल पर काम किया जा रहा है जो कि टास्क फोर्स के साथ जुड़े हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि नई पीढ़ी की प्रौद्योगिकी के मामले में भारत अब अग्रणी राष्ट्रों में शामिल है। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को अनुसंधान एनआरएफ के बारे में भी बताया जो कि अमेरिका के नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की तर्ज पर बना है।

इस बातचीत के दौरान पृथ्वी विज्ञान मंत्री ने बताया कि आने वाले वर्षों में दुनिया दो महत्वपूर्ण घटनाक्रम देखेगी जिसमें एक भारत की डीप ओसन मिशन अनुसंधान और दूसरा भारत की अंतरिक्ष के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां शामिल होंगी। उन्होंने यह जानकारी भी साझा की कि भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र अब प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में शिक्षाविद-उद्योग और स्टार्टअप एकीकरण तथा इलेक्ट्रिक वाहनों और बैटरी

प्रौद्योगिकी में अवसरों के साथ सशक्त हुआ है।

पिछले दशक में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने याद किया कि बायोटेक उद्योग 4,000 से अधिक कंपनियों के साथ 140 अरब डालर तक पहुंच गया है। नासा और इसरो का संयुक्त मिशन-निसार (NISAR) भी अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की बढ़ती ताकत का प्रमाण है। उन्होंने नई अंतरिक्ष नीति और हाल के महीनों में इससे मिले लाभ के बारे में भी बताया।

डॉ. सिंह ने पिछले 10 साल के दौरान सिविल सेवाओं में सुधारों का उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार का 90 प्रतिशत कामकाज अब ऑनलाइन हो रहा है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अधिक से अधिक नागरिक केन्द्रित प्रशासन के साथ ही सरकार का आकार भी छोटा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सूचना आदान-प्रदान कार्यक्रमों और क्षमता निर्माण के माध्यम से भारत और अमेरिका सिविल सेवाओं में सुधारों पर काम कर सकते हैं।

डॉ. जितेन्द्र सिंह की उपस्थिति में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ. अभय करंदीकर ने कहा कि उद्योग और अकादमिक दोनों के साथ भारत क्वांटम समन्वय समिति का हिस्सा है।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ. राजेश गोखले ने टीकों के विकास और जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत-अमेरिका सहयोग का उल्लेख किया।

सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने बताया कि सीएसआईआर के पास धातु, धातु विज्ञान और खानों के क्षेत्र में काम करने वाली तीन समर्पित प्रयोगशालाएँ हैं और इस क्षेत्र में दोनों देशों के पास सहयोग

के पर्याप्त अवसर हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिका ने हमारी स्टील स्लैग सड़क प्रौद्योगिकी में रुचि दिखाई है।

नास्डाक के कार्यकारी उपाध्यक्ष और यूएसआईबीसी ग्लोबल बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के अध्यक्ष एडवर्ड नाइट ने जैम ट्रिनिटी और डीबीटी के भारत के माडल की भी सराहना की और डॉ. जितेन्द्र सिंह को 49वीं इंडिया आइडियाज समिट 2024 के लिए आमंत्रित किया। यूएसआईबीसी के अध्यक्ष, राजदूत



अतुल केशप, यूएसआईबीसी के प्रबंध निदेशक अलेक्जेंडर स्लेटर, यूएसआईबीसी के वरिष्ठ निदेशक आदित्य कौशिक, यूएसआईबीसी के निदेशक डॉ. समीर गुदरू भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे।

सीएसआईआर एनपीएल ने जल की गुणवत्ता आश्वासन तथा भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) के प्रसार पर एक सप्ताह एक विषय कार्यक्रम के अन्तर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) ने 19 जुलाई 2024 को 'एक सप्ताह एक विषय के अंतर्गत-रसायन और पेट्रोकेमिकल्स' पहल के तहत जल की गुणवत्ता आश्वासन तथा भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) के प्रसार पर कार्यशाला का आयोजन किया।

इस आयोजन के अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. एस.आर. धकाटे ने मुख्य संबोधन दिया। कार्यशाला की संयोजक डॉ. एस. स्वरूपा त्रिपाठी ने कार्यशाला की थीम के बारे में जानकारी दी तथा इस बात पर जोर दिया कि भारतीय निर्देशक द्रव्य का उपयोग करके जल की गुणवत्ता आश्वासन किस प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है।

प्रमाणित संदर्भ सामग्री (सीआरएम)

जिसे 'भारतीय निर्देशक द्रव्य' के रूप में ब्रांडेड किया गया है, यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रयोगशालाओं के परीक्षण और अंशांकन का समर्थन करती है। इस अवसर पर जल शक्ति मंत्रालय के निदेशक श्री प्रदीप सिंह ने भारत में जल गुणवत्ता प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने जल जीवन मिशन के तहत किए जा रहे जल गुणवत्ता नियंत्रण कार्यक्रम के प्रतिचित्रण के बारे में बताया।

भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) प्रयोगशाला नीति एवं नीति विकास प्रमुख श्री अजय तिवारी ने पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर में बीआईएस की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कैसे बीआईएस के तहत



परीक्षण प्रयोगशाला पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर के परीक्षण से जुड़ा हुआ है। सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) ने भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) गतिविधियों का अवलोकन किया, जिसमें विभिन्न वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुप्रयोगों में माप के मानकीकरण और सटीकता को सुनिश्चित करने में उनके महत्व पर चर्चा की गई।

सीएसआईआर-निस्पर और एनसीएल ने संयुक्त रूप से 'प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर मूल्यांकन और ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के पेटेंट परिदृश्य' पर एक सप्ताह एक विषय अभियान का आयोजन किया

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने भारत में अपनी 37 प्रयोगशालाओं में 24 जून 2024 से 'एक सप्ताह एक विषय (ओडब्ल्यूओटी)' अभियान का आयोजन शुरू किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेड सेंटर में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी की उपस्थिति में एक सप्ताह एक विषय (ओडब्ल्यूओटी) अभियान का उद्घाटन किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस अवसर पर एक सप्ताह एक विषय (ओडब्ल्यूओटी) अभियान के प्रतीक चिन्ह का अनावरण किया, उन्होंने इसके साथ ही वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) उत्पादों का शुभारंभ, समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और 12 विषयगत प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण का भी अनावरण किया। एक सप्ताह एक विषय (ओडब्ल्यूओटी) सीएसआईआर की एक अनूठी पहल है जिसका उद्देश्य अपनी कई प्रयोगशालाओं में व्यापक विषयगत अनुसंधान और नवाचारों को प्रदर्शित करना है। यह कार्यक्रम भारत में वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के विभिन्न योगदान को प्रदर्शित करने और विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों के साथ जुड़ने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

कार्यक्रम की श्रृंखला को विशिष्ट विषयों

के इर्द-गिर्द तैयार किया गया है, जिसमें प्रत्येक सप्ताह का केन्द्र बिन्दु एक पृथक क्षेत्र को समर्पित है। एक सप्ताह एक विषय (ओडब्ल्यूओटी) अभियान 24 जून को शुरू किया गया है और इसका समापन 17 दिसम्बर 2024 को होगा और इस छह महीने के दौरान, सीएसआईआर की संबंधित प्रयोगशालाओं द्वारा कुल आठ व्यापक विषयों को शामिल



किया जाएगा।

ऊर्जा और ऊर्जा उपकरण (ईईडी) विषय को पहले विषय के रूप में पहचाना गया। इस विषय वस्तु केन्द्रित ओडब्ल्यूओटी कार्यक्रम का उद्घाटन 24 जून, 2024 को सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में आयोजित किया गया।

ईईडी विषय वस्तु के रूप में, सीएसआईआर की क्रमशः दो प्रयोगशालाओं-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) और सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनसीएल) ने मिलकर 25 जून 2024 को सीएसआईआर-एनसीएल, डॉ. होमी भाभा रोड, पुणे में "टीआरएल असैसमेंट एंड पेटेंट लैंडस्केपिंग ऑफ एनर्जी टेक्नोलॉजीस: पाथवेज फॉर कमर्शियलाइजेशन" शीर्षक पर एक कार्यक्रम आयोजित किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे के निदेशक डॉ. आशीष लेले ने ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के लिए प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (टीआरएल) मूल्यांकन और पेटेंट लैंडस्केपिंग के महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की तथा व्यावसायीकरण के मार्गों में उनके महत्व पर जोर दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आईसीटी मुंबई के पूर्व कुलपति डॉ. प्रो. जी.डी. यादव ने टीआरएल के आकलन और पेटेंट लैंडस्केपिंग में सीएसआईआर-निस्पर के सराहनीय कार्य की खूब प्रशंसा की। उन्होंने ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के भविष्य को सटीक स्वरूप प्रदान करने में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में दो अहम तकनीकी सत्र शामिल थे। पहला सत्र प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर के आकलन पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता कोलकाता के टीसीजी-क्रेस्ट में सतत ऊर्जा अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. सतीशचंद्र ओगले ने की।

ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के प्रौद्योगिकी मानचित्रण पर केंद्रित दूसरे सत्र की अध्यक्षता विश्वकर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सिद्धार्थ जाबड़े ने की। ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया के निदेशक डॉ. रेजी मथाई की अध्यक्षता में 'ऊर्जा उपकरण: व्यवसायीकरण के मार्ग' पर एक पैनल परिचर्चा आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 150 छात्रों, संकाय, शोध संस्थानों, स्टार्ट-अप्स और उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सीएसआईआर-एनबीआरआई ने फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए ओडिशा के किसान समूह के साथ समझौता-ज्ञापन हस्ताक्षर किया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनबीआरआई), लखनऊ ने सबुजा सनातनपाली किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड (एसएसएफपीसीएल) ओडिशा के पहले पुष्पकृषि आधारित किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), के साथ पुष्पकृषि को बढ़ावा देने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह एफपीओ ओडिशा में जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने तथा पुष्प उत्पादन और विपणन प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए अपने परिचालन मॉडल में संस्थागत अनुप्रयुक्त अनुसंधान को शामिल करने वाले प्रथम संगठनों में से एक है।

ओडिशा में 6,500 हेक्टेयर भूमि पर फूलों की खेती की जाती है, जहाँ सालाना लगभग 24,800 टन फूल पैदा होते हैं। हालाँकि, यह उत्पादन राज्य की मांग का केवल 10 प्रतिशत ही पूरा करता है, और बाकी की पूर्ति वह कोलकाता, बेंगलुरु, दिल्ली और हैदराबाद जैसे प्रमुख केंद्रों से करता है। यह कमी स्थानीय उद्यमियों के लिए फूलों की खेती में करने का एक आकर्षक अवसर प्रस्तुत करती है, जो विकास के लिए एक तैयार क्षेत्र है।

पैलेडियम द्वारा 2021 में एक तकनीकी सहायता इकाई के रूप में स्थापित और नाबार्ड द्वारा 'सीएसएस योजना के तहत 10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन' के अंतर्गत समर्थित एसएसएफपीसीएल

संबलपुर जिले के जुजुमुरा वन क्षेत्र में स्थित है।

इस संगठन में 1,200 से ज़्यादा छोटे और सीमांत किसान सदस्य हैं, जिनमें से लगभग 50 प्रतिशत महिलाएँ हैं और कुल मिलाकर लगभग 3,500 किसान इससे लाभान्वित होते हैं। फूलों की खेती के अलावा, एसएसएफपीसीएल कई तरह के कृषि उत्पाद का विपणन करता है, जिसमें आम और सब्जियाँ जैसे-गोभी, मिर्च, फूलगोभी और भिंडी शामिल हैं, जो छोटे किसानों द्वारा उत्पादित की जाती हैं।

इस अवसर पर चन्द्रशेखर, मोहंती, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान ने कहा कि किसान समूह की उत्पादक कंपनी को तकनीकी और वैज्ञानिक सहायता प्रदान की जाएगी। इसमें गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री, नई पौधों की किस्मों की शुरुआत, स्थानीय वातावरण में प्रदर्शन का मूल्यांकन, कृषि - बागवानी प्रथाओं में प्रशिक्षण और मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन शामिल है। ये प्रयास फसल विविधता को बढ़ावा देंगे और एफपीओ के सतत आर्थिक विकास का समर्थन करेंगे।

इस अवसर पर विश्वजीत बेहेरा, एसोसिएट डायरेक्टर, पैलेडियम इंडिया ने कहा कि



जलवायु-स्मार्ट कृषि मॉडल को बढ़ावा देकर एफपीओ के लिए समावेशी व्यापार वृद्धि में तेजी लाना पैलेडियम का मुख्य दृष्टिकोण रहा है। उन्होंने कहा कि एसएसएफपीसीएल जैसे समूह के समर्थन का उद्देश्य किसान समूहों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को प्रदर्शित करने वाले मॉडल को बढ़ावा देना है। उन्होंने उल्लेख किया कि सबुजा सनातनपाली जैसे उभरते एफपीओ को देखना उत्साहजनक है और यह एफपीओ सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनबीआरआई) के साथ साझेदारी के माध्यम से अपने उत्पादन प्रक्रियाओं में अनुप्रयुक्त और वैज्ञानिक अनुसंधान को एकीकृत कर रहा है ताकि उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके, जलवायु परिवर्तन के कारण कम उत्पादकता का बेहतर विकल्प तैयार किया जा सके और उच्च निर्यात बाजारों का लक्ष्य रखा जा सके। इस प्रकार दोनों संगठन कृषि के क्षेत्र आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देंगे।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ने अपना 42वां स्थापना दिवस समारोह मनाया।

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने 2 जुलाई 2024 को अपना 42वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, माननीय महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव डीएसआईआर, भारत सरकार ने संस्थान के कार्य की सराहना और स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से देश को बहुत अधिक उम्मीद है। अतः हमारा दायित्व है कि हम राष्ट्र एवं विश्व की अपेक्षाओं एवं चुनौतियों को पूरा करने की दिशा में प्रयासरत रहें। हिमालय में अपार संभावनाएं हैं एवं संस्थान को जैवसंपदा से जैव-अर्थव्यवस्था की ओर सदा अग्रसर रहना चाहिए। समारोह की विशिष्ट अतिथि महामहिम अनीसा के. बेगा उच्चायुक्त, संयुक्त गणराज्य तंजानिया उच्चायोग, भारत, नई दिल्ली ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-आईएचबीटी को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जैवसंपदा जीवन का आधार है और दोनों देश मिलकर इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। प्रो. रेखा सिंघल, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, खाद्य इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी विभाग, रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईसीटी), मुंबई ने “सतत खाद्य उत्पादन एवं प्रसंस्करण - वर्तमान समय की आवश्यकता” विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया तथा 17 सतत विकास लक्ष्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। इससे पूर्व,



सीएसआईआर-आई एचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए जैवआर्थिकी को बढ़ावा देने में संस्थान का सामर्थ्य तथा नए अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि अरोमा मिशन के तीसरे चरण के अंतर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी ने ग्यारह राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में संगंध फसलों की खेती के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाया है। सीएसआईआर-फ्लोरीकल्चर मिशन के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड और लद्दाख के लगभग एक हजार किसानों को गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री वितरित की गई। इस अवसर पर संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24 तथा सीएसआईआर-आईएचबीटी की सफलता की

कहानी का भी विमोचन किया गया। इसके साथ ही फ्लोरीकल्चर एवं हाइपेरिकम पर 2 ब्रोशर भी विमोचित किए गए। समारोह के दौरान संस्थान ने एम्पावरिंग फार्मर्स फाउंडेशन तंजानिया के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। साथ ही दो प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते भी किए गए। किसानों को संगंध पादप के बीज भी वितरित किए गए। स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान में टाईप-4 के नवनिर्मित आवासों, होस्टल परिसर में व्यायामशाला, हरित गृह का उद्घाटन तथा बनूरी फार्म की चारदीवारी निर्माण का शिलान्यास भी किया गया। इस अवसर पर उद्यमियों, स्टार्ट-अप के साथ विचार विमर्श एवं एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।



इस अवसर पर सीएसआईआर जिज्ञासा कार्यक्रम के अन्तर्गत पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पालमपुर, जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश के 50 छात्रों व 03 अध्यापकों ने भाग

लिया। कृषि विश्वविद्यालय के 50 छात्रों तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस के 30 छात्रों ने संस्थान की शोध एवं विकास गतिविधियों का अवलोकन किया। इस समारोह

में संस्थान के कर्मचारी, छात्र, पूर्व कर्मचारी, उद्यमी एवं उत्पादक, नगर के गणमान्य व्यक्ति, तथा मीडिया के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

डॉ. प्रशांत के पात्रो को राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2023 से सम्मानित किया गया।

सीएसआईआर राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. बी. प्रशांत के पात्रो को भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2023 से सम्मानित किया गया है। सीएसआईआर-एनजीआरआई द्वारा यह सूचित किया गया कि डॉ. पात्रो को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार भूभौतिकी और अनुप्रयुक्त भूभौतिकी में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

डॉ. पात्रो ने अपनी शैक्षणिक यात्रा ओडिशा के बरहामपुर विश्वविद्यालय से बीएससी के साथ शुरू की, इसके बाद उन्होंने आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम से एम.एससी. की डिग्री अर्जित की। सीएसआईआर-एनजीआरआई में कार्य-ग्रहण करने के पश्चात

उन्होंने हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से पीएचडी की। उनका शोध मुख्य रूप से मैग्नेटोटेलेयूरिक (एमटी) पद्धति का उपयोग करके पृथ्वी की पपड़ी और ऊपरी आवरण की प्रतिरोधकता संरचना पर केंद्रित है। डॉ. पात्रो के अध्ययनों ने भूकंपीय विवर्तनिकी और संसाधन अन्वेषण (हाइड्रोकार्बन, भू-ताप) के क्षेत्र में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है। उन्होंने विभिन्न भूभौतिकीय और अन्वेषण चुनौतियों से निपटने के लिए उन्नत एमटी तकनीकों को क्रियान्वित किया है। इस बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



सीएसआईआर-एनसीएल ने ऊर्जा और ऊर्जा उपकरण विषय पर एक सप्ताह एक विषय कार्यक्रम शुरू किया



सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनसीएल), पुणे ने अन्य सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर 24 जून 2024 को ऊर्जा और ऊर्जा उपकरण (ईईडी) विषय पर 'एक सप्ताह एक विषय (ओडब्लूओटी) कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-एनसीएल के निदेशक डॉ. आशीष लेले ने स्वागत भाषण दिया और ऊर्जा और ऊर्जा उपकरण के क्षेत्र में सीएसआईआर के कार्यों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने मुख्य रूप से हाइड्रोजन पर आधारित प्रौद्योगिकियों, अगली पीढ़ी की बैटरियों, जैव-ईंधन, सौर ऊर्जा संचयन और भंडारण, तथा कोयला आधारित ईंधन पर चर्चा की। डॉ. (श्रीमती) डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली ने अपने संदेश में 'एक सप्ताह एक विषय' पहल के बारे में बताया। उन्होंने सीएसआईआर प्रयोगशालाओं ईईडी थीम पर आधारित विकसित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों पर

प्रकाश डाला।

डॉ. सूर्य मोगां, प्रमुख, तकनीकी विभाग, एल एंड टी एनर्जी ने मुख्य अतिथि के रूप में "ऊर्जा संक्रमण: सामग्री परिप्रेक्ष्य" विषय पर अपना बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया और 'एक सप्ताह एक थीम (owot)' के अवसर पर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। डॉ. मोगांटी की प्रस्तुति दो मुख्य भागों में विभाजित थी। उन्होंने पहले भाग में ऊर्जा, खनिज और सामग्री पर चर्चा की और विशिष्ट खनिजों और इससे मिलने वाले अवसरों के लिए इसकी महत्वपूर्ण आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने पुनर्चक्रण और एक चक्रीय अर्धव्यवस्था का निर्माण इसके महत्व पर विस्तार से चर्चा की तथा उन तकनीकी नवाचारों पर प्रकाश डाला जो पृथ्वी में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हैं। अपने भाषण के दूसरे भाग में उन्होंने इलेक्ट्रोलाइट के परिप्रेक्ष्य में लिथियम-आयन बैटरी की सुरक्षा पर फोकस किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार प्रसार-स्तर थर्मल स्थिरता की जांच करें और तरल इलेक्ट्रोलाइट्स

की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

डॉ. मोगांटी ने फ्लेम रिटार्डेंट के प्रयोग, फॉस्फोरस यौगिकों की आणविक अभियांत्रिकी, और कैथोड-इलेक्ट्रोलाइट इंटरफेस को कैसे नियंत्रित किया जाए, जैसे विषयों पर चर्चा की। उन्होंने बैटरी की थर्मल स्थिरता के गुणों की जांच की प्रक्रिया, व्यावसायिक लिथियम आयन इलेक्ट्रोलाइट्स के गुण और इंजीनियर्ड फास्फोरस यौगिक का विस्तार से वर्णन किया। डॉ. मोगांटी ने सुरक्षा और निष्पादन दोनों स्तर पर इलेक्ट्रोलाइट्स को अनुकूलित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य के निष्कर्ष के रूप बताया कि वस्तुतः नवाचार ही जीवन में आगे बढ़ने की कुंजी है। उन्होंने बैटरी, इलेक्ट्रोलाइट्स और फ्यूल सेल में उन्नति के साथ-साथ पुनर्चक्रण प्रौद्योगिकियों में सुधार के साथ साथ परिधीय अर्धव्यवस्था के संवर्धन की संभावनाओं को रेखांकित किया।



उद्घाटन सत्र के बाद, दो प्रमुख तकनीकी सत्रों में प्रमुख विशेषज्ञों ने विभिन्न अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों पर अपने विचार साझा किए। इसके साथ ही उपर्युक्त गतिविधियों के समानांतर छात्र आउटरीच गतिविधियाँ आयोजित की गईं। पहले तकनीकी सत्र में सीएसआईआर- सीजीसीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जयंत मुखोपाध्याय ने "सॉलिड ऑक्साइड इलेक्ट्रोलाइट्स और फ्यूल सेल" पर गहन चर्चा की। उनके बाद सीएसआईआर-सीईसीआरआई के निदेशक डॉ. के. रमेश ने "नेक्स्ट जेन बैटरीज़", बैटरी प्रौद्योगिकी और इसके भविष्य की संभावनाओं पर अपनी प्रस्तुति दी। इसके बाद सीएसआईआर-आईआईपी के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सनत कुमार ने "वैकल्पिक जैव ईंधन" विषय पर बात की, जिसमें संधारणीय ऊर्जा समाधान पर नवीन दृष्टिकोणों और उनके संभावित प्रभाव पर प्रकाश डाला। सीएसआईआर-नीस्ट के निदेशक डॉ. सी. आनंदधर्मकृष्णन

ने पहले सत्र का समापन करते हुए "एग्रोफोटो वोल्टेइक्स (पीवी) और भवन एकीकृत पीवी" पर बात की, और कृषि और बुनियादी ढांचे के



निर्माण में फोटोवोल्टिक प्रौद्योगिकियों के एकीकरण पर चर्चा की।

दूसरा तकनीकी सत्र अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियों/व्याख्यानों के साथ जारी रहा। डॉ. प्रशांत धाकेफालकर, निदेशक, एआरआई ने "बायो हाइड्रोजन" पर एक व्यापक अंतर्दृष्टि साझा की और भविष्य के

ऊर्जा परिदृश्य में इसकी भूमिका को स्पष्ट किया। तत्पश्चात डॉ. सारिका केलकर, केपीआईटी में बैटरी के लिए कार्यक्रम प्रमुख ने "अगली पीढ़ी की बैटरी" के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने बैटरी प्रौद्योगिकी में हुई महत्वपूर्ण प्रगति को रेखांकित किया। डॉ. शशिशंकर पद्मनाभन, प्राज मैट्रिक्स ने "वैकल्पिक जैव ईंधन" पर अपने विचार साझा किए, उन्होंने वैकल्पिक स्रोतों और उनके अनुप्रयोग के बारे में विस्तार से बताया। निष्कर्ष सत्र के दौरान प्रो. शैबाल सरकार, एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे, ने "अगली पीढ़ी के सौर उपकरण" पर चर्चा की जिसमें उन्होंने सौर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार और भविष्य की प्रगति पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन स्थानीय प्रेस और मीडिया के साथ बातचीत के साथ हुआ, जिसमें सत्र के दौरान हुई महत्वपूर्ण विषयों पर की गई चर्चाओं से प्राप्त अंतर्दृष्टि को पुनः दोहराया गया।

सीएसआईआर-एचआरडीसी ने विभिन्न प्रशिक्षण एवं उपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन किया

सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा 'जांच अधिकारियों और प्रस्तुतकर्ता अधिकारियों के लिए सतर्कता मामलों' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीआरआरआई), नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम विशेष रूप से जांच अधिकारियों, प्रस्तुतकर्ता अधिकारियों और उन प्रशासनिक अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित किया गया था जो सीएसआईआर में जांच रिपोर्ट की समीक्षा, दंड लगाने और उसके वित्तीय निहितार्थ जैसे सतर्कता/अनुशासनात्मक कार्य करते हैं। इस कार्यक्रम में अनुशासनात्मक कार्यवाही को नियंत्रित करने वाले नियमों और विनियमों से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की गई और मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सीसीएस (सीसीएस) नियम, सीवीओ, सीएसआईआर और लैब में सतर्कता अधिकारियों की भूमिका और आईओ और पीओ की क्षमता निर्माण को शामिल किया गया। सीएसआईआर-एचआरडीसी के प्रमुख डॉ. टी.एस. राणा ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। सीएसआईआर के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री रूप किशोर और सीएसआईआर-सीआरआरआई के निदेशक डॉ. मनोरंजन परीदा क्रमशः कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि थे। इस कार्यक्रम में विभिन्न सीएसआईआर संस्थानों से 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया।



1. सेवानिवृत्ति के बाद जीवन की योजना पर कार्यक्रम, 10-12 जून, 2024

यह तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम उन सीएसआईआर कर्मियों के लिए डिज़ाइन किया गया था जो अपने पेशेवर जीवन से सेवानिवृत्त होने वाले थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य सीएसआईआर में काम करने वाले लोगों को वित्तीय, स्वास्थ्य और प्रेरक स्थिरता प्रदान करना था। सेवानिवृत्ति के लिए वित्तीय रूप से तैयार होना महत्वपूर्ण है, लेकिन भावनात्मक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं को संबोधित करना और उन्हें एक संतुलित योजना में एकीकृत करना अंततः एक सफल और सार्थक सेवानिवृत्ति की कुंजी है। इस कार्यक्रम ने उन्हें काम पर आत्मविश्वास और उत्पादकता बढ़ाने

और सफल और प्रभावी जीवन को बढ़ावा देने के लिए समय पर और उचित सेवानिवृत्ति योजना में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ स्तर के वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और सामान्य कैडर अधिकारियों के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

2. अभिलेख प्रबंधन, प्रशासन और संरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, 20-21 जून, 2024)

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को परिचालन दक्षता बढ़ाने, अनुपालन सुनिश्चित करने, जोखिमों को कम करने, निर्णय लेने में सहायता करने और संगठनात्मक स्थल, ज्ञान और अखंडता को संरक्षित करने के लिए प्रभावी रिकॉर्ड प्रबंधन के महत्व के बारे में जागरूक करना था।

कार्यक्रम ने कार्यालय के काम को सहायता देने के लिए एक उपकरण के रूप में रिकॉर्ड प्रबंधन और संग्रह का उपयोग करने पर जोर दिया। इसमें जीवन-चक्र प्रबंधन, वर्गीकरण और अनुक्रमण, प्रतिधारण और निपटान नीतियां, लेखा परीक्षा और अनुपालन निगरानी, भौतिक और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड प्रबंधन, रिकॉर्ड प्रबंधन प्रौद्योगिकियां जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया। रिकॉर्ड प्रबंधन का लक्ष्य एक संगठन के रूप में सीएसआईआर को संचालन और अनुपालन लेखा परीक्षा दोनों के लिए आवश्यक दस्तावेज सुलभ रखने में मदद करना था। श्री महेंद्र कुमार गुप्ता, सयुक्त सचिव, प्रशासन, सीएसआईआर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न सीएसआईआर संस्थानों से 77 प्रतिभागियों ने भाग लिया।



सीएसआईआर-एनपीएल द्वारा ऊर्जा एवं ऊर्जा उपकरणों पर आधारित एक सप्ताह एक थीम कार्यक्रम का आयोजन

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) अपनी 37 प्रयोगशालाओं में आठ अलग-अलग थीमों में एक सप्ताह एक थीम (ओडब्ल्यूओटी) पर सप्ताह भर की गतिविधियों का आयोजन कर रहा है, ताकि क्रियान्वयन के योग्य अनुसंधान को विपणन योग्य/मूल्य-वर्धित प्रौद्योगिकियों/उत्पादों में परिवर्तित किया सके और प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग को आसान बनाने के लिए हितधारकों से संपर्क बढ़ाया जा सके। इस कार्यक्रम का लक्ष्य विषय "ऊर्जा और ऊर्जा उपकरण (ईईडी)" था। जिसका मुख्य फोकस ऊर्जा उत्पादन और भंडारण से जुड़े समाधानों के लिए पारंपरिक, गैर-पारंपरिक, टिकाऊ और अभिनव दृष्टिकोणों पर केंद्रित था।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) ने भी ओडब्ल्यूओटी:ईईडी कार्यक्रम के अंतर्गत 26 और 27 जून, 2024 को दो-दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें फोटोवोल्टिक मेट्रोर्लॉजी, लचीले सौर सेल (सिलिकॉन और पेरोव्स्काइट), ऊर्जा, गैस (हाइड्रोजन और वैकल्पिक ईंधन) मेट्रोर्लॉजी और कृषि अपशिष्ट से बायोकोल के क्षेत्रों में तकनीकी शक्तियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक विशेषज्ञों की प्रस्तुतियां, उद्योग सम्मेलन,



प्रयोगशाला दौरा एवं विभिन्न सुविधाओं का प्रदर्शन शामिल था।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सुशील कुमार ने सीएसआईआर-एनपीएल द्वारा ऊर्जा आधारित प्रौद्योगिकी संचालित



अनुसंधान की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने ऊर्जा और ऊर्जा उपकरणों पर सीएसआईआर-एनपीएल के ओडब्ल्यूओटी:ईईडी कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में विस्तार से चर्चा की। सीएसआईआर-एनपीएल के कार्यवाहक निदेशक डॉ. एस.आर. धकाते ने सौर, बायोमास, हाइड्रोजन पर अक्षय ऊर्जा और प्रौद्योगिकी

के महत्व और ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की इसकी क्षमता के बारे में बताया। सौर-ऊर्जा और बायोमास को बायोकोल प्रौद्योगिकी में परिवर्तित करने में सीएसआईआर एनपीएल के योगदान पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि सीएसआईआर-एनपीएल अगले 2-3 महीनों में प्राथमिक संदर्भ सौर सेल कैलिब्रेशन सेवा

प्रदान करने जा रहा है। उन्होंने सौर उद्योग को इसका लाभ उठाने के लिए भी कहा। कार्यक्रम में पीवी उद्योग से लगभग 40 प्रतिभागियों और विभिन्न संस्थानों के 80 छात्रों ने भाग लिया। 27 जून, 2024 को हरित ऊर्जा, गैस और बायोमास से बायोकोल पर एक विशेष सत्र का आयोजन भी किया गया।

सीएसआईआर ने एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (एमएसएसआरएफ) ने ग्रामीण, जनजातीय और कृषक समुदायों के बीच आजीविका सृजन के लिए एक साथ मिलकर कार्य करने के उद्देश्य से एक सहमति ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है। इस सहमति ज्ञापन पर सीएसआईआर की महानिदेशक डा. एन. कलैसेल्वी और एमएसएसआरएफ की अध्यक्ष डॉ. सौम्या स्वामीनाथन ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर सीएसआईआर के वरिष्ठ अधिकारी और एमएसएसआरएफ के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस अवसर पर सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने कहा कि



यद्यपि सीएसआईआर की प्रयोगशालाएं संभावित उपयोगकर्ताओं के लिये उनमें

विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रचार-प्रसार करती हैं लेकिन विशेष तौर पर सामाजिक क्षेत्र तक इनकी पहुंच बढ़ाने के लिये जमीनी स्तर पर काम करने वाले एमएसएसआरएफ जैसे संगठनों के साथ हाथ मिलाकर ही यह काम किया जा सकता है।

एमएसएसआरएफ की अध्यक्ष डॉ. सौम्या स्वामीनाथन ने कहा कि यह फाउंडेशन जनजातीय और कमजोर समुदायों तक पहुंचने के अपने प्रयासों के अंतर्गत इस व्यापक समझौता ज्ञापन के माध्यम से एक प्रौद्योगिकी प्रदाता भागीदार के तौर पर सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर चुनिंदा कम लागत वाली, सस्ती

और सामर्थ्यवान प्रौद्योगिकी और तकनीकी समर्थन की मांग कर रहा है, क्योंकि आदिवासी अथवा ऐसे ही अन्य समूह उनकी भौगोलिक स्थिति, संचार की भाषा और जरूरी संसाधनों की कमी जैसे कई अंतर्निहित कारणों से सीएसआईआर प्रयोगशालाओं तक सीधे पहुंचने में सक्षम नहीं हैं।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य समस्त सीएसआईआर प्रयोगशालाओं/संस्थानों में उपलब्ध सामाजिक सरोकारों वाली सस्ती, प्रमाणित और चुनिंदा प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिये एक रूपरेखा और सार्थक सहयोग बनाना तथा आजीविका सृजन और महिलाओं, जनजातीय आबादी के सशक्तिकरण के लिए एमएसएसआरएफ द्वारा चयनित स्वयं सहायता समूहों/गैर-

सरकारी संगठनों/कृषक उत्पादक संगठनों तथा अन्य स्वैच्छिक संगठनों को देना शामिल है।

सीएसआईआर, वैश्विक प्रभाव के लिए प्रयासरत विज्ञान, नवाचार-संचालित उद्योग को सक्षम बनाने वाली प्रौद्योगिकियों और अंतर्विषयी नेतृत्व को पोषित करने के विज्ञान के साथ भारत के लोगों के लिये समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ाने के उद्देश्य से विविध क्षेत्रों यथा- स्वास्थ्य सेवाओं, कृषि, पोषण और जैव प्रौद्योगिकी, उर्जा और उर्जा उपकरणों, रसायन, चमड़ा उद्योग और पेट्रोरसायन, खनन, खनिज, धातु और सामग्री, नागरिक अवसंरचना और इंजीनियरिंग, वांतरिक्ष, इलेक्ट्रॉनिक्स और इंस्ट्रुमेंटेशन और सामरिक क्षेत्र, पारिस्थितिकी, पर्यावरण, पृथ्वी विज्ञान और जल आदि में परिणाम- संचालित मिशन मोड में अनुसंधान

और विकास कार्य करता है।

एमएसएसआरएफ, भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत पंजीकृत एक गैर-लाभकारी ट्रस्ट है। भारत सरकार के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग द्वारा एक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान संगठन के रूप में इसे मान्यता प्राप्त है। यह विशेष रूप से जनजातीय और ग्रामीण समुदायों में गरीब, महिलाओं और प्रकृति के अनुकूल दृष्टिकोण रखते हुए काम करता है। फाउंडेशन देशभर में फैले अपने उप-केन्द्रों और जमीनी स्तर पर काम करने वाले स्टेशनों के माध्यम से कृषि, खाद्य और पोषण क्षेत्र में ग्रामीण आबादी के समक्ष आने वाली व्यवहारिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकल्पों को लागू करता है।

सीएसआईआर- सीआरआरआई ने अपना 73वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर - केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीआरआरआई) ने हाल ही में अपने परिसर में 73वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), भारत सरकार तथा अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

डॉ. एन. कलैसेल्वी ने इस मौके पर 'एसीएसआईआर

पीएचडी स्कॉलर लैब' का उद्घाटन किया तथा अपना मुख्य उद्बोधन दिया। उन्होंने अपने

उद्बोधन में अपने बहुमूल्य विचार और मार्गदर्शन को साझा किया। उन्होंने दो से तीन



वर्षों में केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) की ओर से प्रदान की जाने वाली स्थानीय, मानवीय और तकनीकी बढ़त का लाभ उठाते हुए भारत की भावी चुनौतियों के लिए नीति विकसित



करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने एसीएसआईआर के लिए निजी संस्थाओं और पूर्व विद्यार्थियों के संयुक्त सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर प्रोफेसर मनोरंजन परिदा, निदेशक, सीआरआरआई ने देश में सीएसआईआर-सीआरआरआई की भूमिका के बारे में अपने सम्बोधन में बताया कि यह बैलगाड़ी तकनीक से लेकर बायो बाइंडर, व्यापक यातायात और परिवहन योजना, आईआरएएसटीई, अपशिष्ट से सम्पदा, ऑटो ईंधन नीति तक विभिन्न प्रभागों की गतिविधियों तक फैला हुआ है। इस मौके पर डॉ. रवीन्द्र कुमार ने सीआरआरआई के पहले निदेशक अर्न्स्ट जिपकेस को याद किया, जिनकी दूरदर्शिता एवं अथक परिश्रम के आधार पर संस्थान की स्थापना की गई। सीआरआरआई की स्थापना के बारे में सर्वप्रथम नागपुर में 1943 के मुख्य अभियंताओं के सम्मेलन में चर्चा की गई थी। तत्पश्चात सीएसआईआर के पहले महानिदेशक सर शांति स्वरूप भटनागर के

मार्गदर्शन में मार्च 1950 में सीएसआईआर की आम सभा द्वारा इसे मंजूरी दी गई।

सीएसआईआर-सीआरआरआई के तिहत्तरवें स्थापना दिवस समारोह ने वैज्ञानिक नवाचार को बढ़ावा



देने और सड़क एवं परिवहन अनुसंधान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों और योगदान देने वालों के उत्साह और समर्पण को रेखांकित करते हुए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सम्पन्न हुआ। सीएसआईआर-सीआरआरआई के स्थापना दिवस के अवसर पर जिज्ञासा

योजना के तहत ओपेन डे में 200 से अधिक स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय (डीटीयू) के कुलपति प्रोफेसर प्रतीक शर्मा ने सतत विकास चुनौतियों के लिए इंजीनियरिंग समाधान पर मुख्य व्याख्यान दिया। इस समारोह के दौरान उद्योगों के साथ कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। विद्यार्थियों के लिए अपने शोध से जुड़े पोस्टर फॉर्म को साझा करने के लिये विवडस 2024 का आयोजन किया गया। डॉ. विनोद क्रार ने इन गतिविधियों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सीएसआईआर-सीआरआरआई ने उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस आयोजन को वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा में उत्कृष्ट कार्यों को प्रेरित करने और आगे बढ़ाने के लिये यादगार बनाया।

सीएसआईआर-नीरी ने डॉ. अशोक एस. जुवारकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी) ने 15 जुलाई 2024 को नीरी सभागार में डॉ. अशोक एस. जुवारकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. एम.एल. खान, वरिष्ठ प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

डॉ. अशोक एस. जुवारकर स्मृति व्याख्यान देते हुए डॉ. खान ने बिगड़ते पारिस्थितिकी तंत्र पर चिंता व्यक्त करते हुए विज्ञान और नीति के माध्यम से दीर्घकालिक समाधान की आवश्यकता पर बल दिया। जलवायु परिवर्तन पर अपने विचार साझा करते हुए डॉ. खान ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में कम ऊंचाई पर रहने वाली प्रजातियां अधिक ऊंचाई की ओर पलायन कर रही हैं और फूलों के खिलने का मौसम और पूरे बर्फबारी के पैटर्न में परिवर्तन हो रहा है। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता पर इसके प्रभावों को कम करने के कई प्रबंधन विकल्पों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि क्षतिग्रस्त पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने की इतनी तत्काल आवश्यकता पहले कभी नहीं रही। उन्होंने श्रोताओं को पूर्वी हिमालय और भारत-बर्मा के जैव संसाधनों के मानचित्रण और साथ ही दुर्लभ और लुप्तप्राय वृक्ष प्रजातियों के संरक्षण की रणनीतियों के बारे में बताया। डॉ. खान ने मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश और मध्य भारत



के पवित्र उपवनों में जैव विविधता विशेषताओं की सूची और मानचित्रण पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने रुद्राक्ष पौधे के पुनरुद्धार के लिए उपयोगी रणनीतियों के बारे में बताया।

डॉ. अतुल वैद्य, निदेशक, सीएसआईआर-नीरी ने अपने स्वागत संबोधन में स्वर्गीय डॉ. अशोक एस. जुवारकर के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में हमारे लिए एक नया द्वार खोलता है और सीएसआईआर-नीरी लगातार इस दिशा में प्रगति के लिए समर्पित है। इससे पूर्व, स्वर्गीय डॉ. अशोक एस. जुवारकर को समर्पित पुस्तक 'ट्रीज़ एंड ट्री माइक्रोहैबिटेट ऑफ सीएसआईआर-नीरी नागपुर' का विमोचन किया गया था और श्रोताओं को उनके महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया गया। इस अवसर पर इस पुस्तक की संपादक डॉ. शालिनी ध्यानी, प्रधान वैज्ञानिक,



सीएसआईआर-नीरी भी उपस्थित थी।

डॉ. देबिशी खान, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। श्री प्रकाश कुंभारे, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस व्याख्यान में कमला नेहरू महाविद्यालय, नागपुर के बीएससी और एमएससी (पर्यावरण विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी) के पचास विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और उन्होंने सीएसआईआर-नीरी प्रयोगशाला का दौरा किया तथा वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।

सीएसआईआर-चौथा पैराडाइम संस्थान द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया

सीएसआईआर-4पीआई, बेंगलूरु में दिनांक 25 जून 2024 को कार्यसाधक एवं प्रवीणता प्राप्त सभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. इम्तियाज़ अहमद परवेज़, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन

समिति एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-4पीआई ने सभी उपस्थित कार्मिकों का स्वागत किया और राजभाषा हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी से अपील की कि अपने शासकीय कार्य में राजभाषा हिन्दी का यथासंभव प्रयोग करें।

श्रीमती मंगला, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-4पीआई भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सीएसआईआर-4पीआई की हिन्दी

अधिकारी श्रीमती निर्मला बाई एस पी ने भारत सरकार की राजभाषा नीति पर चर्चा करने के उपरांत कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग, वायस टाइपिंग, अनुवाद और हिन्दी कीबोर्ड, आदि की जानकारी दी।

इस कार्यशाला में श्री अभिमन्यु तिवारी वित्त एवं लेखा अधिकारी ने हिन्दी में वित्त एवं

लेखा के बुनियादी अवधारणाओं पर प्रकाश डाला और श्री विकास चन्द्र मिश्रा, भंडार एवं क्रय अधिकारी ने हिन्दी में भण्डार एवं

क्रय प्रक्रियाओं पर विस्तृत जानकारी दी। दोनों प्रवक्ताओं ने चर्चा सत्र के दौरान प्रतिभागियों के कई प्रश्नों का समाधान दिया।

सभी प्रतिभागियों तथा वक्ताओं के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।



कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों / जनसम्पर्क अधिकारियों / हिन्दी अधिकारियों / अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों / पुरस्कार / सम्मानों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार / सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक

सीएसआईआर समाचार